Source StylesFormat

Swami Vivekanand Govt. PG College Harda (M.P.)

AQAR 2022-23

CRITERION -3

3.3.2 - Number of research papers per teachers in the Journals notified on UGC website during the year

Swami Vivekanand Govt. PG College Harda (M.P.)

AQAR 2022-23
Criterion 3.3.2

S. No.	Name of Supporting Documents	Page No.
1.	**3.3.2 - Number of research papers per teachers in the Journals notified on UGC website during the year**	1-21

Dr. Rakesh Singh ~~Parsate~~ Parsate

Annexure- III (Activity-3) Point No. (6)

Please refer Activity-3: (6) Invited Lectures/Recourse Person/Paper Presentation in Seminars/Conferences/Full Paper in Conference Proceedings

S.N.	Title of Lecture/ Academic Session	Title of Conference/Seminar/Training	Organized by	Whether International (Abroad)/International (Within Country)/National/State/ University	A/R Score
1	Chaired one of the Technical Sessions & Presented Paper titled *"Tracing the Identity and Suppressed Voices of Women through Postcolonial Indian Women Writings"* in Three Days **International Conference** during 20-22 March, 2023	International Conference on *"Imagining and Translating the 'Other': Engaging with Contemporary Indian Literature"*	Department of English Language and Literature, Central University of Odisha, Koraput, Odisha	**International (Within Country)**	5
	Presented Paper titled *"An analytical Study of Ramayana as a rich Heritage and its impact on the life and Literature of Entire Humanity"* in Two Days International Seminar on 15th to 16th July, 2022.	'Social and Cultural Heritage of Ramayana'	Department of English and Foreign Languages, Indira Gandhi National Tribal University, Amarkantak (MP) sponsored by Indian Council of Social Science Research, New Delhi	**International (Within Country)**	5
2	Paper titled *"NEP 2020: Transformation of Indian Education System into Holistic Development & Global Knowledge Superpower Nation"* on 19.03.2023.	one day National Seminar on "Role of NEP-2020 in the Transformation of Higher Education"	sponsored by Department of Higher Education (UP) & organized by Mahamaya Govt. Degree College, Mahona, Lucknow (UP)	**National**	3

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जिला-हरदा (म.प्र.)

N.A.

3	Paper titled *"Introducing NEP 2020: Transformation of Indian Education System"* in the one day National Seminar on "National Education Policy NEP 2020 on dated 28.02.2023.	"National Education Policy NEP 2020: Various Aspects"	sponsored by World Bank Project MPHEQIP & organized by Swami Vivekananda Govt. P.G. College, Harda (MP)	**National**	**3**
	Paper titled *"An Eco-critical Study to Amitav Ghosh's 'The Hungry Tide'* in the 33rd All Indian Congress of Zoology (AICZ) and National Seminar during August 10 to 12th, 2022	"Emerging Trends in Biological Sciences in the Light of Environmental Degradation and Life Sustainability"	Department of Zoology, Pandit S.N. Shukla University, Shahdol, Madhya Pardesh, India in collaboration with the Zoological Society of India.	**National**	**3**
	Invited as an Expert Lecture of the one day Talk on the topic *'Effective Communication Skills and Interview for Achieving Goals"* 10th of May, 2022.	'Effective Communication Skills and Interview for Achieving Goals"	*under the Technical Education Quality Improvement Programme* organized by Govt. Polytechnic College, Harda (MP)	University	**3**
				TOTAL □	**22**

Note: Attached herewith all the documentary proofs/Certificates in support of the above information.

प्राचार्य
स्वामी विवेकानंद शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जिला-हरदा (म.प्र.)

Global Journal of Multidisciplinary Studies
ISSN:- 2348-0459

Volume 22, Issue 14, March 2023
Available online at www.gjms.edwin.co.in

(34)

गढ़ा मण्डला एवं गोंडकाल का प्राचीन इतिहास

डॉ. धीरा शाह
सहायक प्राध्यापक (इतिहास विभाग)
स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदा (म.प्र.)

सारांश

संस्कृति, वैभव और विवेक ये तीनों साथ–साथ रहते हैं। दैवी संपत्ति और आसुरी इन दोनों में जो भेद हैं, उस भेद को पहचान करने वाली बुद्धि को विवेक कहते हैं। सात्विक कमाई के धन से उत्पन्न सांसारिक सुख और उस सुख के साथ मानसिक संतोष, जिस स्थिति में रहता है उस स्थिति को वैभव कहते हैं। अपनी मानसिक वृत्तियों पर काबू रखने से जब मनुष्य सात्विक विचारों की तरफ बढ़ता है और विचारों की तरफ बढ़ने से अपने मन को रोकता है, इस प्रकार अपने मन के उपर जो अनुशासन की स्थिति रहती है, उस स्थिति को संस्कृति कहते हैं। गोंड़ों की संस्कृति और ऐतिहासिक प्रगति में जिस प्रकार मुगल आक्रमणकारी बाधक हुये, उसी प्रकार मराठे भी बाधक हुये। गोंड़ राजाओं और प्रजा के लिय, जैसे मुगल वैसे ही मराठे । मेरा ध्येय साम्प्रदायिक द्रोह फैलाने का नहीं है। साम्प्रदायिक द्रोह का प्रचार करके मैं अपनी इस पुस्तक के ध्येय के प्रति और अपने उत्तरदायित्व के प्रति अन्याय ही करूंगा। मुझे द्रोह फैलाने से कुछ भी लाभ नहीं होगा। इतिहासकार, केवल तथ्यों को महत्व देता है, देना पड़ता है। ऐतिहासिक तथ्यों को छुपाया नहीं जा सकता, तथ्यों की विवेचना भी करना पड़ती है।

मुख्य शब्द : संस्कृतिक सांसारिक, सात्विक, सामप्रदायिक

प्रस्तावना

किसी जमाने में भारत का दक्षिणी भाग अफ्रीका और आस्ट्रेलिया से भूमि में संलग्न था। आज जहां हिन्द महासागर लहरा रहा है, वहां किसी जमाने में भूमि थी। दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के आदिवासियों से और मण्डला जिला के गोंड वैगा आदि से रक्त साम्य शरीर गठन आदि बहुत सी बातें मिलती हैं, ऐसा अधुनिक विद्वानों का मत है। आस्ट्रेलिया के आदिवासियों को माओरि कहते हैं। दक्षिण अफ्रीका के सोमली लैण्ड में रावण के नाना सुमाली नामक राजा का राज्य रहा होगा ।

इस प्रकार की कुछ मान्यताओं से आकर्षित होकर या प्रभावित होकर मण्डला में विद्वानों के दौरे होते रहते हैं। दिनांक 05.12. 1964 को मण्डला में अमेरिका के एक विद्वान आये उनका नाम श्री Theodore D. Mc Cown, Ph.D, Professor of Anthropolgy, The Department of Anthorpology, University of California, Berkeley, California, U.S.A. दिनांक 20.02.1965 को मण्डला में डॉ. हंसमुख धीरजलाल संकलिया, डेकन कॉलेज पूना–6 ये महाशय आये। इन दोनों सज्जनों ने मुझे बताया कि मण्डला जिला में आसपास, पाषाण युग के औजार मिले। उन सज्जनों ने मुझे दिखाया और अपने साथ ले गये। डॉ. संकलिया को हिरदेनगर में एक छोटा सा पत्थर का टुकड़ा मिला, जिसके बारे में उन्होंने बताया कि यह औजार कम से कम पच्चीस हजार वर्ष पहले का है।

गोंडवाना का मण्डला जिला, नर्मदा माई का, बाल–कीड़ा स्थल है। उमर में नर्मदा माई, गंगाजी से बहुत बड़ी है। भू–गर्भ शास्त्र के सर्वमान्य विद्वान, आस्ट्रेलिया निवासी एडुअर्ड सुएस के अनुसार गोंडवाना क्षेत्र का अस्तित्व आज से पैंतीस करोड़ वर्ष पहले भी था । अर्थात नर्मदा माई की उम्र पैंतीस करोड़ वर्ष से भी अधिक है। उन्हीं विद्वान के अनुसार आज से केवल सात करोड़ वर्ष पहले ज्वालामुखी से हिमालय बना। हिमालय बन चुकने के बाद ही गंगाजली की धारा बह सकी। गंगा जी की उम्र सात करोड़ वर्ष से अधिक नहीं है, वे कहते हैं कि Tertiary मतं की तीसरी स्टेज में हिमालय के बनने से गोंडवाना क्षेत्र में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। आर्य संस्कृति के बहुत पहले गोंड़वाना क्षेत्र में आबादी अवश्य रही होगी। पैंतीस करोड़ वर्षों में न जाने कितनी बेर और न जाने कितने प्रकार के प्रलय हुये होंगे। फिर भी शैलों की स्थिति और नर्मदा माई की धारा कायम है।

जिस क्षेत्र में आज मण्डला जिला है, उस क्षेत्र में अनादिकाल से आज तक कई बेर ज्वालामुखी हुये होंगे। उनके कुछ प्रमाण कहीं–कहीं देखने को मिल जाते हैं। जैसे शहपुरा से आठ मील उत्तर में

प्राचार्य
शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जिला–हरदा (म.प्र.)

(A High Impact Factor, Quarterly, Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal)
NAVJYOT / Vol. XI / issue - III ISSN 2277-8063

जनजातीय धार्मिक अनुष्ठान एवं देवलोक की अवधारणा
(गोंड जनजाति के विशेष संदर्भ में)

डॉ धीरा शाह सहायक प्राध्यापक इतिहास, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदा (म.प्र.)

सारांश– गोंडवाना भू–भाग में निवासरत गोंड जनजाति की अदभूत चेतना उसकी सामाजिक प्रथाओं, मनोवृत्तियों, भावनाओं, आचरणों, तथा भौतिक पदार्थो को आत्मसात करने की कला की परिचायक है, जो कि विज्ञान पर आधारित है। गोंड भारत की सबसे बडी जनजाति है। म.प्र. में गोंड जनजाति का निवास सबसे अधिक है। गोंड एक संस्कृति सम्पन्न एवं प्रभाव की दृष्टि से एक सुदृढ जनजाति है। गोंड प्रकृति प्रेमी होते है। प्राकृतिक जीवन उनका आदर्श जीवन होता है। गोंड जनजाति की धार्मिक परम्परा मे अनेक देवी देवताओं, आत्मा सम्बन्धी विश्वासों तथा जादूई क्रियाओं का समावेश देखने को मिलता है। अनेक देवी–देवताओं में विश्वास करने के साथ ही गोंड, पूर्वजो की आत्माओं को संतुष्ट करने के लिए विशेष क्रियाएं की जाती हैं। उनका विश्वास है कि प्रत्येक सफलता और असफलता पूर्वजों की आत्माओं की प्रसन्नता अथवा अप्रसन्नता का ही परिणाम होता है। गोंडों की मान्यता के अनुसार बूढादेव साजावृक्ष में वास करते है, वे प्रकृति के पूजक हैं। उनकी देवी–देवताओं पर अटूट श्रद्धा एवं आस्था है। ग्राम–देवी–देवताओं के अतिरिक्त परिवार की खुशहाली के लिए घर पर ही विभिन्न देवी–देवताओं की पूजा करते हैं, तथा घर के किसी कमरे में अपने पितृ देवी–देवता को स्थापित किया जाता है एवं घर में ही देवस्थल होता है उसे श्मन्दरश कहते है, जिनमें देव का प्रतीक स्थापित रहता है।

कुंजी शब्द :– पितृसत्तात्मक, बहुदेववाद, खेरमाई, बड़ादेव, देवकोठार, पेनकड़ा, परगनादेव, माताडूमा, दशगात्र भूमका मडाई आदि।

जनजातीय परिचयः–

जनजाति वह क्षेत्रीय मानव समूह है जो एक निश्चित भू–भाग, भाषा, सामाजिक नियम धार्मिक अनुष्ठान आदि विषयों में एक समानाता सूत्र में बंधा होता है। भारत में रहने वाली जनजातियों को ही सरकारी भाषा में "अनुसूचित जनजाति" कहा जाता है। सामान्य रूप से और भी स्पष्ट रूप में कहा जा सकता है कि जनजातियां वे हैं जो सभ्य समाज से दूर जंगलों एवं पहाड़ों में निवास करती हैं। इन जनजातियों की अपनी पृथक संस्कृति है जिसमें अन्य समाजों से पृथक सानाजिक संस्थायें, विश्वास, प्रथायें, परम्पराएं, रीति–रिवाज आदि पाये जाते हैं। गोंड जनजाति भारत के कटि प्रदेश विन्ध्यपर्वत, सतपुडा पठार, छत्तीसगढ मैदान में दक्षिण तथा दक्षिण–पश्चिम गोदावरी नदी तक फैले हुए पहाडों और जगलों में रहने वाली आस्ट्रेलायड नस्ल तथा द्रविड़ परिवार की एक जनजाति जो सम्भवतः पाँचवी छठवीं शताब्दी में दक्षिण गोदावरी तट सहारे मध्य भारत के पहाडों में फैल गई। गोंड जनजाति समुदाय वाचक है। भारतीय समाज के निर्माण में गोंड संस्कृति का बहुत बड़ा योगदान रहा है। गोंडवाना भू–भाग में निवासरत गोंड जनजाति की अदभूत चेतना उसकी सामाजिक प्रथाओं, मनोवृत्तियों, भावनाओं, आचरणों तथा भौतिक पदार्थो को आत्मसात करने की कला की परिचायक है, जो कि विज्ञान पर आधारित है। गोंड भारत की सबसे बड़ी जनजाति है। मप्र में गोंड जनजाति का निवास सबसे अधिक है। गोंड एक संस्कृति सम्पन्न एवं प्रभाव की दृष्टि से एक सुदृढ जनजाति है। गोंड प्रकृति प्रेमी होते हैं। प्राकृतिक जीवन उनका आदर्श जीवन होता है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि भारत के मूल निवासी आदिवासी ही हैं। गोंड जनजाति उनमें सबसे प्रभावशाली, पुरातन एवं व्यापक समूह है।

मध्यप्रदेश मे गोंडवाना क्षेत्र का नाम गोंड शासकों और गोंडजनों से अभिहित है। आज भी मध्यप्रदेश की जितनी जनजातियां है, उनकी कुल जनसंख्या में से आधे से अधिक गोंड लोगों की है। गोंड जनजाति की पचास से अधिक उपशाखाएं हैं, जिनका अपना स्वतंत्र अस्तिव, स्थान, बोली ओर सांस्कृतिक सामाजिक क्रियाकलाप है। मध्यप्रदेश में गोंड जनजाति की जनसंख्या वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार 50 लाख से अधिक आंकी गई थी। जो प्रदेश की कुल जनजातीय जनसंख्या का लगभग 35 प्रतिशत थी। गोंड अपने परम्परा के अन्तर्गत चली आ रही ग्रामीण वास्तुकता के अनुरूप मकान बनाने में दक्ष होते है गोंड समाज पितृ सत्तात्मक होते है। गोंड समाज अपने रीति रिवाज एवं परम्पराओं से बंधा हुआ है। गोंड जनजाति जन्म से लेकर मृत्यु तक कई परम्पराओं का निर्वाह करती है। विभिन्न गोंड जनजातियों के अपने अलग–अलग गोत्र है, लेकिन कुछ गोत्र ऐसे

प्राचार्य स्वामी विवेकानंद शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय जिला–हरदा (म.प्र.)

ISSN:2395-1079

Available online at http://wwwSajms.edwin.co.in

South Asia Journal of Multidisciplinary Studies SAJMS March 2023, Vol. 30, No 14

27

प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (सन् 1857 की महान क्रांति) में राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक पृष्ठीूमि

डॉ. धीरा शाह
सहायक प्राध्यापक (इतिहास विभाग)
स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदा (म.प्र.)

प्रस्तुत शोधपत्र, प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (सन् 1857 की महान क्रांति) में राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। अंग्रेज इतिहासकार चर्बी वाले कारतूसों को ही सन् 1857 ई. के विद्रोह का मुख्य कारण मानते थे, परंतु इसी एक कारण के आधार पर इतना बड़ा विद्रोह होने की संभावना बहुत कम होती है। इस क्रांति के कारणों की नींव उतनी ही पुरानी और गहरी थी, जितना पुराना हिन्दुस्तान में अंग्रेजी साम्राज्य था। इन कारणों की जांच के लिए पिछले 120 वर्षों के इतिहास का विश्लेषण करना जरुरी है। भारतीय जनता अंग्रेजों की शासन सम्बंधी, लगान सम्बंधी, धार्मिक और सामाजिक नीति से असंतुष्ट थी। पं. जवाहरलाल नेहरु ने अपनी पुस्तक 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' में लिखा है कि, "लगातार कई शताब्दियों और वर्षों तक भारतीय लोगों को एक कौम और इंसान के रूप में बेइज्जत और जलील कर दिया गया और उसके साथ घृणा भरा सलूक किया जाता था। भारत में उन्होंने फूट डालो और राज करो की नीति पर चलते हुए नफरत के जहरीले बीज बो दिए और अपने राज्य की नींव को मजबूत किया। जाति भेद के आधार पर अंग्रेजों का व्यक्तिगत व्यवहार भी भारतीयों के प्रति बहुत असंतोषजनक होता जा रहा था।" इसी असंतोष के कारण सन् 1816 ई. में बरेली में सन् 1831–33 ई. में कोल जाति ने, सन् 1848 ई. में कांगड़ा में, सन् 1855– 56 ई. में संथाल जाति ने तथा अन्य व्यक्तियों ने भी विभिन्न स्थानों पर सन् 1857 ई. से पहले भी अंग्रेजों के विरुद्ध शस्त्र उठाए थे। ये विद्रोह भारतीयों में व्याप्त तीव्र असंतोष का प्रमाण थे। एस. आर. मेहरोत्रा के अनुसार, "1857 ई. का विद्रोह कट्टरवाद के अचानक फटने का परिणाम नहीं था, बल्कि यह परिस्थितियों की इतनी लम्बी कड़ी का परिणाम था, जिन्होंने असंतोष को जन्म दिया।"

प्रस्तावना

29 मार्च 1857 ई. को अंग्रेजों के विरूद्ध बैरकपुर, कलकत्ता में एक ऐसा विद्रोह शुरू हुआ जो शीघ्र ही समस्त भारत में फैल गया। डा. आर. सी. मजूमदार के शब्दों में, "सारांश यह है कि अंग्रेजों के भारत में शासन की प्रथम शताब्दी में उस महान दुःखान्त नाटक का मंच तैयार हुआ तथा उसके कुछ भागों के अभ्यास किए गए, जिसमें अंग्रेजी शासन की शतवार्षिका रक्त एवं आंसुओं में मनाई गई। "

सन् 1757 की प्लासी की लड़ाई से लेकर सन् 1857 ई के महान विद्रोह तक अंग्रेज की शक्ति बढती गयी, उनकी लालसा भी बढ़ती गयी। अधिक से अधिक अपने साम्राज्य का विसतार करना अंग्रेजों का लक्ष्य बन गया था। इस प्रकार सन् 1857 ई. से पहले अनेक कारणों के परिणाम स्वरूप आग पकड़ने वाली सामग्री पर्याप्त मात्रा में इक्ट्ठी हो चुकी थी, चर्बी वाले कारतूसों ने तो केवल दियासलाई का काम किया।

अंग्रेजों द्वारा भारत में अपनाई गई साम्राज्यवादी नीति (Im& perialistic Policy of the Britishers) सन् 1857 ई के व्रिदोह का मुख्य कारण बनी। इस नीति से अंग्रेजों ने झांसी, नागपुर, सतारा, सम्भलपुर, उदयपुर जैतपुर की रियासतों को अंग्रेजी साम्राज्य में मिला लिया। एलिनबरा (1842–44) के समय सिंध के अमीरों, जो निर्दोष एवं अंग्रेजों के प्रति स्वामिभक्त थे, के विरूद्ध अभियान भेजा गया और उन्हे पराजित करके सिंध को ब्रिटिश साम्राज्य में शामिल किया गया । सिन्ध के विजेता चार्ल्स नेपियर ने स्वयं लिखा, "सिंध को छीनने का हमारा कोई अधिकार नही, परन्तु फिर भी हम ऐसा करेंगे और यह दुष्टता का एक लाभदायक, उपयोगी एवं मानवीय बदमाशी का उपयोगी काम होगा।"

इसलिए प्रख्यात इतिहासकार डा. आर. सी. मजूमदार के अनुसार, "ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार ने भारत में निराशा तथा विद्रोह की ज्वाला छोड़ी।" (5) साथ ही लार्ड डलहौजी ने सबसे अन्यायपूर्ण कार्यवाही सन् 1856 ई. में अवध के नवाब वाजिद अली शाह को कुप्रबंध को दोष लगाते हुए अवध को अंग्रेजी साम्राज्य में विलय करना था। इस पर प्रसिद्ध इतिहासकार सुरेन्द्रनाथ सेन का यह कहना पूर्ण ठीक है,

मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियो के रहन सहन एवं रीती–रिवाज एक सामान्य अध्ययन

1.डॉ निर्मला डोंगरे 2 डॉ. रश्मि सिंह

सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा मध्यप्रदेश

Email -1- nirmaladongre02@gmail-com 2-rashmi9229@gmail-com

संक्षेपिका

मध्यप्रदेश में कुल 47 जनजातीयां पाई जाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश की प्रमुख पांच जनजाति जिसमें गोंड ,भील ,कोरकू , बैगा, तथा भारिया जनजाति के सामान्य रहन सहन तथा उनके रीती –रिवाजो के बारे में जानने का प्रयास किया गया है, ये जनजाति दूरस्थ पहाड़ी क्षेत्रो में निवास करती है, तथा इनकी जीदिका उपार्जन का प्रमुख साधन कृषि एवं वनोपज है। सामान्यतः सभी जनजातियों का रहन सहन एवं रीति रिवाज लगभग सामान है इन जनजातियों की प्रमुख विशेषता यह है की यह समूह में रहते है एवं संयुक्त परिवार प्रणाली को महत्व देते है।

मुख्य बिन्दू– जनजाति, गोंड ,भील ,कोरकू,बैगा, भारिया , रहन सहन एवं रीती– रिवाज

प्रस्तावना –

जनजाति अथवा आदिवासी समाज ऐसा मानव समूह है ,जो विकास के सौपन से सबसे निचले स्तर में है। शब्दकोष के अनुसार जनजाति एक सामाजिक समूह है ,जो प्रायः निश्चित भूभाग में निवास करती है। जिसकी अपनी भाषा ,बोली ,सभ्यता तथा सामाजिक संगठन होता है। सामान्यतः यह मन जाता है ,की जनजाति लोग समाज की मुख्या धरा से पृथक जंगलो में निवास करते है।जनजाति में भी अति पिछड़ी जनजाति है जिनमें साक्षरता का निम्न स्तर पाया जाता है।, तथा खेती की पुरातन पद्धति का प्रयोग करते है। साथ ही दूरस्थ एवं दूरगामी क्षेत्रो में निवास करते है इन जनजातियो का संख्या प्रायःस्थिर है या घटती जा रही है । मध्यप्रदेश में कुल 47 जनजातीय पाई जाती है। मध्यप्रदेश में सर्वाधिक जनजाति संख्या अलीराजपुर जिले में है तथा सबसे कम भिंड जिले में पाई जाती है। जनजाति यह सामाजिक समुदाय है, जो राज्य के विकास के पूर्व असितत्व में था, या जो अव भी राज्य से बाहर है। जनजाति वास्तव में भारत के आदिवाशियो के लिए इस्तेमाल होने वाला एक संवेधानिक पद है। भारत के संविधान में अनुसूचित जनजाति पद का प्रयोग हुआ है। और इसके लिए विशेष प्रावधान लागू किये गए है।प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश की 5 प्रमुख जनजातियो जिसमें गोंड ,भील ,कोरकू ,भारिया तथा बैगा जनजातियो के सामान्य रहन सहन एवं रीती रिवाजो का सूक्ष्म अध्ययन किया गया ।

उद्देश्य –

1 मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों का अध्ययन करना ।

2 जनजातियो के रहन सहन एवं रीती– रिवाजो का अध्ययन करना

3 जनजाति के पिछड़े होने के कारणों का अध्ययन करना ।

गोंड जनजाति – गोंड मध्यप्रदेश की एक प्रमुख आदिम जनजाति है ।जिसका संबंध प्रक्क द्रविड़ समूह से माना जाता है ।यह जनसँख्या की दृष्टि से भारत की सबसे बड़ी जनजाति है ।गोंड जनजाति मध्यप्रदेश के सभी जिलो में फेली हुई है, लेकिन नर्मदा के दोनों ओर विंध्य और सतपुडा के पहाड़ी क्षेत्रो में इनका अधिक सकेन्द्रण है। 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश में इनकी जनसँख्या 50.93 लाख है। सर्वाधिक जनसँख्या 6.2 लाख छिंदवाडा में हैं ।

गोंड तेलगू भाषा के शब्द कोंण्ड का अपभ्रंश माना जाता है । तेलगू में कोंण्ड शब्द का आर्थ वन आच्छादित पर्वत है । इस प्रकार गोंडो को पर्वतवासी मनुष्य कहा जाता है । अलग –अलग अंचलो में रहने वाले गोंड कई उपशाखाओ के नाम से जाने जाते है । तब भी इनके रहन –सहन में दहुत फर्क होता है । मंडला में गोंड बड़ी किसानी के साथ जुड़े होने के कारण राजगोंड कहलाते है । गोंड राजाओ तथा बड़ादेवकी गाथा गाने वाले परधान गोंड , एक जगह से दूसरी जगह डेरा डालकर नाचने –गाने वाले भिम्मा ,धोबा ,कोडला, भूता ,लोहा गलाने वाले अंगरिया कहलाते है।

शारीरिक विशेषता –रूगोंड जनजाति के लोगो का रंग काला ,सिर गोल तथा चेहरे पर कम बाल होते है इनका परिवार पित्रसत्तात्मक होता है। स्त्रियों को आभूषण प्रिय होते हैं। तथा इनमें गोदने का प्रचलन पाया जाता है।

प्राचार्य स्वामी विवेकानंद शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरदा (म.प्र.)

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 6.375
Vol - XVIII, Issue - XII, October - 2022

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

मध्यप्रदेश की कोरकू जनजाति का सामान्य अध्ययन

डॉ. रश्मि सिंह
डॉ. निर्मला डोंगरे

1. सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा
2. सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा

सारांश - मध्य प्रदेश में विभिन्न जातियां पाई जाती है जिनमें से सर्वाधिक जनसंख्या गोंड एवं द्वितीय स्थान भील जनजाति का है यह कुल आदिवासी जनसंख्या का 25 प्रतिशत है तृतीय स्थान पर कोल जनजाति समूह को मध्य प्रदेश की तीसरी बड़ी जनजाति समूह माना जाता है कोल समूह की प्रमुख जनजाति कोरकू की जनजाति है । मध्यप्रदेश में कोरकू जनजाति की कुल जनसंख्या 7 .3। लाख है।

प्रस्तुत शोध पत्र में मध्य प्रदेश की कोरकू जनजाति की सामाजिक परम्पराओं रहन-सहन एवं रीति-रिवाजों का आधुनिक परिपेक्ष में अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना:- अनुसूचित जनजाति भारतीय संदर्भ में एक विशिष्ट स्थिति को स्पष्ट करने वाले शब्द है। भारतीय समाज के प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक आदिम समूहों एवं वनवासियों का उल्लेख प्राप्त होता रहा है। वैदिक एवं उत्तरवैदिक काल तथा महाकाव्य काल में जनजातियों के नाम भी उल्लेखित है ।

आदिवासी का अर्थ - आदिवासी समान भाषा सामान्य भौगोलिक क्षेत्र सामान्य नाम की विशेषताओं से युक्त समूह को कहा जाता है जिसके सदस्य एक सामान्य भाषा बोलते है.

मध्य प्रदेश में विभिन्न जनजातियां पाई जाती है जिनमें से सर्वाधिक जनसंख्या गोंड जनजाति की है एवं द्वितीय स्थान भील जनजाति का है यह कुल आदिवासी जनसंख्या का 25 प्रतिशत है तृतीय स्थान पर कोल जनजाति समूह को मध्य प्रदेश की तीसरी बड़ी जनजाति समूह माना जाता है कोल समूह की प्रमुख जनजाति कोरकू की जनजाति है मध्यप्रदेश में कोरकू जनजाति की कुल जनसंख्या 7.3 लाख है, सतपुड़ा के मध्य भाग में कोरकू जनजाति मुख्य रूप से निवास करती है कोरकू की उपजाति रुमा, बोवई, बोदोया, मोवासी आदि कोरकू जनजाति की उपजाति है।

उद्देश्य -

1. मध्यप्रदेश की कोरकू जनजाति का अध्ययन करना।
2. जनजातियों के रहन सहन एवं रीती- रिवाजो का अध्ययन करना
3. कोरकू जनजाति की समस्याओं का पता लगाना।
4. कोरकू जनजाति के पिछड़े होने के कारणों का पता लगाना।
5. उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन का क्षेत्र - हरदा जिले को अध्ययन का क्षेत्र को चुना गया है अनुसूचित जाति (एससी) जनसंख्या 14.1 प्रतिशत है जबकि अनुसूचित जनजाति (एसटी) का 3.9 प्रतिशत है। प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश के हरदा जिले के कोरकू समुदाय पर आधारित है।

कोरकू जनजाति का परिचय:- कोरकू जनजाति मध्य प्रदेश की आदिम जनजाति है। इस जाति के लोग सामान्यता नर्मदा और ताप्ती नदी के किनारे बेतूल हरदा होशंगाबाद खरगोन जिले में रहते हैं। 'कोरकू' शब्द द्रविण भाषा के कोरक शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है- 'किनारा'। कोरकू का एक अन्य अर्थ मानव भी होता है।

मोवासी/महुआ - मोवासी और महुआ वर्ग अपराधिक घोतक है। बबावरिया- बेतूल जिले के कोरकू आदिवासी बावरिया कहलाते हैंरूमा- अमरावती जिले के कोरकू आदिवासी रूमा कहलाते है बन्दोरिया- पचमढ़ी क्षेत्र के रहने वाले कोरकू बंदोरिया कहलाते है।

रहन सहन:- कोरकू जनजातियों का पहनावा साधारण होता है पुरुष सूती बंडी कुर्ता एवं धोती पहनते हैं महिलाएं रंग-बिरंगे धोती पहनती है कोरकू स्त्रियां चांदी पीतल कांसा आदि धातुओं के आभूषण एवं मोतियों की माला पहनती है कोरकू को शाकाहारी और मांसाहारी दोनों होते है मोटे अनाज एवं पत्तेदार सब्जियां इनके प्रमुख भोजन है।

सामाजिक व्यवस्था - कोरकू समाज पितृसत्तात्मक एवं टोटम पर आधारित समाज है इनके दो प्रमुख वर्ग होते हैं राजकोरकू एवं पटारीया राजकोरकू सामाजिक दृष्टि से उच्च माने जाते हैं इनके अतिरिक्त चार अन्य वर्ग-रूमा धोलाडिया, दुलारया और बोवाई पाए जाते हैं कोरकुओ में सगोत्र विवाह निषेध है घर दामाद प्रथा तथा विधवा विवाह एवं वधू मूल्य का प्रचलन है। इस जनजाति मे घर के बाहर सामाजिक निर्णय में महिलाओं की हिस्सेदारी बहुत पाई जाती है। पुरुषो की अपेक्षा महिलायें मेहनत करने वाली, संघर्षशील, कर्मठ आदि होती है। इनमे जितनी स्वतंत्रता पुरुष को मिलती है उतनी ही स्वतंत्रता महिला को भी मिलती है।

सामूहिकता, एकजुटता में विश्वास रखता है। प्रत्येक जनजाति अपनी सुरक्षा का प्रबंध स्वतंत्र सुरक्षात्मक संगठन के द्वारा करती है कुरकु जनजाति में न्याय व्यवस्था के लिए पंचों के माध्यम से विवादों का निपटारा किया जाता है गांव के अनुभवी एवं बुजुर्ग व्यक्तियों पंच के रूप में मान्य किया जाता है कोरकु समुदाय मे निजित्व की जगह सामूहिकता की भावना देखने को मिलती है। आदिवासी समाज प्रकृति से जुड़े होने के कारण जंगलों मे निवास करते है।

आदिवासी संस्कृति एवं धार्मिक जीवन:-जनजाति में धार्मिक विश्वास मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संचालित होते रहते हैं इस जनजाति मे अलग से धार्मिक शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है यह

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 6.375
Vol. XVIII, Issue - XII, October - 2022
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

मध्यप्रदेश की कोरकू जनजाति का सामान्य अध्ययन

डॉ. रश्मि सिंह
डॉ. निर्मला डोंगरे

1. सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा
2. सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा

सारांश: - मध्य प्रदेश मे विभिन्न जातिया पाई जाती है जिनमे से सर्वाधिक जनसंख्या गोंड एवं द्वितीय स्थान भील जनजाति का है यह कुल आदिवासी जनसंख्या का 75 प्रतिशत है तृतीय स्थान पर कोल जनजाति समूह को मध्य प्रदेश की तीसरी बड़ी जनजाति समूह माना जाता है कोल समूह की प्रमुख जनजाति कोरकू की जनजाति है । मध्यप्रदेश में कोरकू जनजाति की कुल जनसंख्या 7.31 लाख है।

प्रस्तुत शोध पत्र में मध्य प्रदेश की कोरकू जनजाति की सामाजिक व्यवस्था रहन-सहन एवं रीति-रिवाजों का आधुनिक परिवेश में अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना:- अनुसूचित जनजाति भारतीय संदर्भ में एक विशिष्ट स्थिति को स्पष्ट करने वाले शब्द है। भारतीय समाज के प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक आदिम समूहों एवं वनवासियों का उल्लेख प्राप्त होता रहा है। वैदिक एवं उत्तरवैदिक काल तथा महाकाव्य काल में जनजातियों के नाम भी उल्लेखित है ।

आदिवासी का अर्थ:- आदिवासी समान भाषा, सामान्य भौगोलिक क्षेत्र, सामान्य नाम की विशेषताओं से जुड़े समूह को कहा जाता है, जिसके सदस्य एक समान भाषा बोलते है।

मध्य प्रदेश मे विभिन्न जनजातियां पाई जाती है जिनमें से सर्वाधिक जनसंख्या गोंड जनजाति की है एव द्वितीय स्थान भील जनजाति का है यह कुल आदिवासी जनसंख्या का 75 प्रतिशत है तृतीय स्थान पर कोल जनजाति समूह को मध्य प्रदेश की तीसरी बड़ी जनजाति समूह माना जाता है कोल समूह की प्रमुख जनजाति कोरकू की जनजाति है । मध्यप्रदेश मे कोरकू जनजाति की कुल जनसंख्या 7.31 लाख है। सतपुड़ा के मध्य भाग मे कोरकू जनजाति मूल रूप मे निवासरत है, कोरकू की उपजाति महानाला, मौवासी रूमा, बवरी, बोंडोया आदि कोरकू जनजाति की उपजाति है।

उद्देश्य:-

1. मध्यप्रदेश की कोरकू जनजाति का अध्ययन करना।
2. जनजातियों के रहन सहन एवं रीती- रिवाजो का अध्ययन करना
3. कोरकू जनजाति की समस्याओं का पता लगाना।
4. कोरकू जनजाति के पिछड़े होने के कारणो का पता लगाना।
5. उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।

अध्ययन का क्षेत्र:- हरदा जिले को अध्ययन का क्षेत्र को चुना गया है अनुसूचित जाति (एससी) जनसंख्या 14.1 प्रतिशत है जबकि अनुसूचित जनजाति (एसटी) का 3.9 प्रतिशत है। प्रस्तुत अध्ययन मध्य प्रदेश के हरदा जिले के कोरकू समुदाय पर आधारित है।

कोरकू जनजाति का परिचय:- कोरकू जनजाति मध्य प्रदेश की आदिम जनजाति है। इस जाति के लोग सामान्यतः नर्मदा और ताप्ती नदी के किनारे बैतूल हरदा होशंगाबाद खण्डवा जिले में रहते है। 'कोरकू' शब्द द्रविड़ भाषा के कोरक शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है- 'किनारा'। कोरकू का एक अन्य अर्थ मानव भी होता है।

मावासी/महुआ:- मावासी और महुआ वर्ग अपराधिक प्रवृत्ति के। बवारिया- बैतूल जिले के कोरकू आदिवासी बावरिया कहलाते है। रूमा- अमरावती जिले के कोरकू आदिवासी रूमा कहलाते है बन्दोरिया- पचमढ़ी क्षेत्र के रहने वाले कोरकू बन्दोरिया कहलाते है।

रहन सहन:- कोरकू जनजातियों का पहनावा साधारण होता है पुरुष सूती बड़ी कुर्ता एवं धोती पहनते है महिलाएं रंग-बिरंगे धोती पहनती है कोरकू स्त्रियां चांदी पीतल कांसा आदि धातुओं के आभूषण एवं मोतियों की माला पहनती है कोरकू का शाकाहारी और मांसाहारी दोनों होते है मोटे अनाज एवं पत्तेदार सब्जियां इनके प्रमुख भोजन है।

सामाजिक व्यवस्था:- कोरकू समाज पितृसत्तात्मक एवं टोटम पर आधारित समाज है इनके दो प्रमुख वर्ग होते है राजकोरकू एव पठारिया राजकोरकू सामाजिक दृष्टि से उच्च माने जाता है इनके अतिरिक्त चार अन्य वर्ग-रूमा, पोतड़िया, दुलारया और बोंदोई पाए जाते है कोरकुओं मे सगोत्र विवाह निषेध है घर जमाई प्रथा तथा विधवा विवाह एवं वधू मूल्य का प्रचलन है। इस जनजाति मे घर के बाहर सामाजिक निर्णय मे महिलाओं की हिस्सेदारी बहुत पाई जाती है। पुरुषो की अपेक्षा महिलाये मेहनत करने वाली, सहनशील, ईमानदार आदि होती है। इनमे जितनी स्वतन्त्रता पुरुष को मिलती है उतनी ही स्वतन्त्रता महिला को भी मिलती है।

सामूहिकता एकजुटता मे विश्वास रखता है। प्रत्येक जनजाति अपनी सुरक्षा का प्रबंध स्वतंत्र सुरक्षात्मक संगठन के द्वारा करती है कोरकू जनजाति मे न्याय व्यवस्था के लिए पंचो के माध्यम से विवादों का निपटारा किया जाता है गांव के अनुभवी एव बुजुर्ग व्यक्तियों पंच के रूप मे मान्य किया जाता है कोरकू समुदाय मे निजता की जगह सामूहिकता की भावना देखने को मिलती है। आदिवासी समाज प्रकृति से जुड़ा होने के कारण जंगल मे निवास करता है।

आदिवासी संस्कृति एवं धार्मिक जीवन:- जनजाति मे धार्मिक विश्वास मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी मे संचालित होते रहते है इस जनजाति मे अलग से धार्मिक शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है यह

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जिला-हरदा (म.प्र.)

16

मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियो के रहन सहन एवं रीती–रिवाज एक सामान्य अध्ययन

1.डॉ निर्मला डोंगरे 2 डॉ. रश्मि सिंह
सहायक प्राध्यापक अर्थशास्त्र स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा मध्यप्रदेश
Email –1- nirmaladongre02@gmail-com 2-rashmi9229@gmail-com

संक्षेपिका

मध्यप्रदेश में कुल 47 जनजातीयां पाई जाती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश की प्रमुख पांच जनजाति जिसमें गोंड ,भील ,कोरकू , बैगा, तथा भारिया जनजाति के सामान्य रहन सहन तथा उनके रीती –रिवाजो के बारे में जानने का प्रयास किया गया है, ये जनजाति दूरस्थ पहाड़ी क्षेत्रो में निवास करती है, तथा इनकी जीविका उपार्जन का प्रमुख साधन कृषि एवं वनोपज है। सामान्यतः सभी जनजातियों का रहन सहन एवं रीति रिवाज लगभग सामान है इन जनजातियों की प्रमुख विशेषता यह है की यह समूह में रहते है एवं संयुक्त परिवार प्रणाली को महत्व देते है।

मुख्य बिन्दू– जनजाति, गोंड ,भील ,कोरकू,बैगा, भारिया , रहन सहन एवं रीती– रिवाज

प्रस्तावना –

जनजाति अथवा आदिवासी समाज ऐसा मानव समूह है ,जो विकास के सौपन से सबसे निचले स्तर में है। शब्दकोष के अनुसार जनजाति एक सामाजिक समूह है ,जो प्रायः निश्चित भूभाग में निवास करती है। जिसकी अपनी भाषा ,बोली ,सभ्यता तथा सामाजिक संगठन होता है। सामान्यतः यह मन जाता है ,की जनजाति लोग समाज की मुख्या धरा से पृथक जंगलो में निवास करते है।जनजाति में भी अति पिछड़ी जनजाति है जिनमें साक्षरता का निम्न स्तर पाया जाता है।, तथा खेती की पुरातन पद्धति का प्रयोग करते है। साथ ही दूरस्थ एवं दूरगामी क्षेत्रो में निवास करते है इन जनजातियो का संख्या प्रायःस्थिर है या घटती जा रही है । मध्यप्रदेश में कुल 47 जनजातीय पाई जाती है। मध्यप्रदेश में सर्वाधिक जनजाति संख्या अलीराजपुर जिले में है तथा सबसे कम भिंड जिले में पाई जाती है। जनजाति यह सामाजिक समुदाय है, जो राज्य के विकास के पूर्व अस्तित्व में था, या जो अव भी राज्य से बाहर है। जनजाति वास्तव में भारत के आदिवाशियो के लिए इस्तेमाल होने वाला एक संवेधानिक पद है। भारत के संविधान में अनुसूचित जनजाति पद का प्रयोग हुआ है। और इसके लिए विशेष प्रावधान लागू किये गए है।प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यप्रदेश की 5 प्रमुख जनजातियो जिसमें गोंड ,भील ,कोरकू ,भारिया तथा बैगा जनजातियो के सामान्य रहन सहन एवं रीती रिवाजो का सूक्ष्म अध्ययन किया गया ।

उद्देश्य –

1 मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियां का अध्ययन करना ।
2 जनजातियो के रहन सहन एवं रीती– रिवाजो का अध्ययन करना
3 जनजाति के पिछड़े होने के कारणों का अध्ययन करना ।

गोंड जनजाति – गोंड मध्यप्रदेश की एक प्रमुख आदिम जनजाति है ।जिसका संबंध प्रक्क द्रविड़ समूह से माना जाता है ।यह जनसँख्या की दृष्टि से भारत की सबसे बड़ी जनजाति है ।गोंड जनजाति मध्यप्रदेश के सभी जिलो में फेली हुई है, लेकिन नर्मदा के दोनों ओर विंध्य और सतपुडा के पहाड़ी क्षेत्रो में इनका अधिक सकेन्द्रण है। 2011 की जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश में इनकी जनसँख्या 50.93 लाख है। सर्वाधिक जनसँख्या 6.2 लाख छिंदवाडा में हैं ।

गोंड तेलगू भाषा के शब्द कोंण्ड का अपभ्रंश माना जाता है । तेलगू में कोंण्ड शब्द का आर्थ वन आच्छादित पर्वत है । इस प्रकार गोंडो को पर्वतवासी मनुष्य कहा जाता है । अलग –अलग अंचलो में रहने वाले गोंड कई उपशाखाओ के नाम से जाने जाते है । तब भी इनके रहन –सहन में बहुत फर्क होता है । मंडला में गोंड बड़ी किसानी के साथ जुड़े होने के कारण राजगोंड कहलाते है । गोंड राजाओ तथा बड़ादेवकी गाथा गाने वाले परधान गोंड , एक जगह से दूसरी जगह डेरा डालकर नाचने –गाने वाले भिम्मा ,धोबा ,कोडला, भूता ,लोहा गलाने वाले अगरिया कहलाते है।

शारीरिक विशेषता –रूगोंड जनजाति के लोगो का रंग काला ,सिर गोल तथा चेहरे पर कम बाल होते है ।इनका परिवार पित्रसत्तात्मक होता है। स्त्रियों को आभूषण प्रिय होते है। तथा इनमें गोदने का प्रचलन पाया जाता है।

प्राचार्य
स्वामी विवेकानंद शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जिला–हरदा (म.प्र.)

ACROPOLIS

Challenges in Using ICT Tools in Teaching and Learning

Dr. Smita Girgune
Assistant Professor (Commerce),
Swami Vivekanand Government P.G. College Harda

Abstract

In the digital era, the use of ICTs tools in the education industry is giving the opportunities to acquire knowledge and learn which required 21st century skills. . In education, little or no ICTs tools are being used to improve student performance, mainly because education professionals are largely illiterate in information management tools. This paper provides a systematic review of the literature on challenges faced by teacher using the ICTs tools in the classrooms. There are 21 studies taken as the samples after applying inclusion and exclusion. An attempt is made through this study to explore issues and the problem faced by education institutions in using the ICTS tools.

Key Words: Information and Communication Technology, ICTs, Challenges, Technical barriers

INTRODUCTION

ICT, which is the acronym for information and communication technology can be defined as: "combination of computer, video and telecommunication technologies, as observed in the use of multimedia computers and networks and also services which are based on them". According to UNESCO (2002) "ICT is a scientific, technological and engineering discipline and management technique used in handling information, its application and association with social, economic and cultural matters". 21st Century is also the age of information and technology (IT). During the past few years, the world has witnessed a phenomenal growth in communication technology, computer network and information technology. Huge flow of information is emerging in all fields throughout the world. Information and communication technology (ICT) is a force that has changed many aspects of the way we live. Information and communications technology (ICT) is an important part of most organizations these days. If one was to compare such fields as medicine, tourism, travel, business, law, banking, engineering and architecture, the impact of ICT across the past two or three decades has been enormous. The way these fields operate today is vastly different from the ways they operated in the past. But when one looks at education, there seems to have been an uncanny lack of influence and far less change than other fields have experienced. A number of people have attempted to explore this lack of activity and influence. New technologies have the potential to upkeep education across the curriculum and deliver opportunities for efficient student-teacher communication in ways not possible before. ICT in education has the potential to transform teaching. Teachers are at the core of any living society. Technologies play an important role in training programme of teachers. Without proper knowledge of ICT teacher cannot perform in his/her class room and it could not be said to be a complete one.

NEED AND SIGNIFICANCE OF THE STUDY

Conventional teaching has emphasised

प्राचार्य
स्वामी विवेकानन्द शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जिला-हरदा (म.प्र.)

(A High Impact Factor, Quarterly, Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal)

NAVJYOT / Vol. XI / Issue - III ISSN 2277-8063

आजादी की लड़ाई में संथालों की भूमिका

डॉ. सी. पी. गुप्ता, सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा–461331, मध्यप्रदेश
मोबाइल न. 7974824118 Email-chandrapal.gupta@yahoo.com
डॉ.धर्मेंद्र कोरी, प्राध्यापक (हिंदी) स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हरदा–461331, मध्यप्रदेश मोबाइल न. 9340402100

वास्तव में ना केवल मनुष्य बल्कि संसार के सभी जीव–जगत और वनस्पतियों को भी आजादी पसंद होती है। आजादी के बिना कोई भी मनुष्य या जीव–जगत अपने जीवन का सर्वांगीण और सतत विकास नहीं कर सकता। इसके साथ ही दूसरा सच यह भी है कि मनुष्य स्वभाव से ही वर्चस्ववादी और शोषणकारी होता है, जिसके लिए वह सतत नीतियां, षड्यंत्र और रणनीतियां भी बनाता रहता है। प्लासी युद्ध के 100 वर्षो के अंदर ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्य तथा उसके द्वारा प्रयोगात्मक विधि के क्रियान्वयन से समाज के विभिन्न वर्गों, समुदायों तथा क्षेत्रों में असंतोष के स्वर आंदोलन, विद्रोह और सैनिक विप्लव के रूप में प्रस्फुटित होते रहे हैं। इन विद्रोहों के पीछे अन्य अनेक कारण भी अंतर्निहित थे जैसे कि भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में हस्तक्षेप, नवीन प्रशासनिक नीतियां, करारोपण, स्थानीय अर्थव्यवस्था का ध्वस्त होना, भारत में औपनिवेशिक ब्रिटिश सरकार स्थाई समाज और भू–राजस्व प्राप्त करने के उद्देश्य से जंगलों को काट कर कृषि भूमि का विस्तार कर रही थी। अंग्रेजों का साथ देकर स्थानीय जमींदारों ने जंगली भूमि को कृषि भूमि में बदलकर धान की खेती करवाना प्रारंभ कर दिया था। इस नीति के पीछे अंग्रेजों का उद्देश्य था कि वे अपने देश की आवश्यकता के मुताबिक कृषि उत्पादों का अधिकाधिक उत्पादन करा के उसे भारत से ब्रिटेन निर्यात कर सके।

जंगलों में रहने वाले भारत के मूलनिवासी इसे अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप और शोषण के रूप में देख रहे थे, जबकि तथाकथित सभ्य अंग्रेज भारत के सभी वनवासियों को क्रूर, असभ्य, उग्र, बर्बर एवं असामाजिक मानते थे। जिन्हें स्थाई रूप से बसाकर उन्हें सभ्य एवं पालतू बनाया जाना प्रस्तावित था, क्योंकि असभ्यों को सभ्य बनाने का भार मानो गोरी चमड़ी को उनके ईश्वर ने ठेके पर उपलब्ध कराया था।

1757 ई. की प्लासी की लड़ाई में औपनिवेशिक फिरंगी सत्ता की स्थापना की नींव पड़ने से लेकर 15 अगस्त 1947 ई. तक के काल का अवलोकन करने से यह स्पष्ट हो जाता है, कि इस पूरे कालखंड के दौरान भारतीय किसी न किसी कारण से अंग्रेजों की सत्ता को सदैव चुनौती प्रस्तुत करते रहे हैं। चाहे वह 1770 के दशक का सन्यासी विद्रोह हो या फिर 18 फरवरी, 1946 का शाही नौसेना का विद्रोह अर्थात 190 वर्षो की गुलामी के दौर में भारतीय आजादी की लड़ाई में अपने–अपने क्षेत्रों एवं समुदायों के हितों की रक्षा हेतु लड़े और हारे भी किंतु उन्होंने अपना कभी हौसला नहीं खोया और ना ही वे लड़ने से कभी पीछे हटे।

यहां एक और तथ्य पर विहंगम दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि अंग्रेजों से भारत का कोई ना कोई वर्ग सदैव लड़ा और हारा किंतु उसने पीछे मुड़कर यह देखने की कोशिश नहीं की, कि आखिर चंद अंग्रेज इतने विशाल देश को गुलाम कैसे बनाए हुए हैं? यह एक यक्ष प्रश्न है! किंतु इसका सामान्य उत्तर है कि हमने अंग्रेजों का प्रतिरोध एक देश के रूप में नहीं, बल्कि एक धर्म, जाति, वर्ग या क्षेत्र के रूप में सदैव किया है, तभी तो जब मराठे लड़ रहे थे तो सिख शांत थे, जब बुंदेला लड़ रहे थे तो गोंड उदासीन थे। हमारे देश का किसान, मजदूर, राजा, प्रजा, शिल्पी, व्यापारी, जागीरदार, संन्यासी, मुंडा, संथाल, भील, हो, अहोम, कोल और भी अनेक आदिवासी समुदाय अकेले लड़ते रहे और दूसरा केवल तमाशबीन बनकर अपने शोषण की इंतहा होने का इंतजार करता रहा और जब उसके शोषण की इंतहा हो गई तो वह लड़ा और फिर दूसरा तमाशबीन की भूमिका में आ गया। आखिरकार जब गांधी जी ने संपूर्ण देश को एकता के सूत्र में पिरोया तो फिर अंग्रेजों को देश से बाहर जाने के अलावा अन्य कोई विकल्प नजर नहीं आया।

भारत में अंग्रेजों ने अपनी राजनीतिक सत्ता की स्थापना हेतु विजयी यात्रा, 1757 ई. में प्लासी के युद्ध के साथ ही प्रारंभ कर दी थी, और उपनिवेशवादी व साम्राज्यवादी अश्वमेधी यज्ञ के अश्व को रोकने का जन जागरण तथा आक्रोश 1857 ई. की क्रांति के रूप में उभर कर सामने आया था, इसकी प्रकृति को लेकर इतिहासकारों में हमेशा ही मतभेद रहे हैं, और कुछ इतिहासकारों

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor • 6.375
Vol • XIX, Issue • II, December • 2022
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

मध्यप्रदेश का जनजाति समाज एवं जनजातियों में विवाह परंपरा

श्रीमती शर्मिला मीणा
डॉ. दीप्ति अग्रवाल

1. सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य, स्वामी विवेकानन्द शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा
2. सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य, स्वामी विवेकानन्द शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा

प्रस्तावना:-विवाह का शाब्दिक अर्थ है उद्वह अर्थात वधू को वर के घर ले जाना। हिंदू धर्म में विवाह को 16 संस्कारों में से एक प्रमुख संस्कार माना गया है। हिंदू संस्कृति के अनुसार यह एक सामाजिक प्रथा है जिससे गृहस्थ जीवन का प्रथम चरण माना गया है इसे पाणिग्रहण संस्कार भी कहा जाता है। विवाह का शाब्दिक अर्थ है उत्तरदायित्व का वहन करना भी है। अन्य धर्मों में विवाह एक करार होता है जिसे विषम परिस्थितियों में तोड़ा जा सकता है, किंतु हिंदू धर्म के अनुसार विवाह को जन्म जन्मांतर का संबंध माना गया है।

तूसी मेयर की परिभाषा के अनुसार-

''विवाह की परिभाषा यह है कि वह स्त्री-पुरूष का ऐसा योग है, जिससे स्त्री से जन्मा बच्चा माता-पिता की वैध सन्तान माना जाता है।''

बोगार्डस ने विवाह को परिभाषित करते हुए लिखा है अनुसार, ''विवाह स्त्री और पुरूष के पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने की एक संस्था है।'

भारत में अनेक जनजातियां निवास करती हैं।भारत में जनसंख्या के आधार पर सबसे अधिक जनजातियां मध्यप्रदेश में पाई जाती है। 2011 की जनगणना के अनुसार मध्य प्रदेश की कुल जनसंख्या 72626809 है। मध्यप्रदेश में जनजाति की जनसंख्या 15316784 है मध्य प्रदेश की कुल जनसंख्या का 21.10 प्रतिशत जनजाति जनसंख्या है। जिसमें पुरुषों की जनसंख्या 7719404 तथा महिलाओं की जनसंख्या 7597380 है।

जनजाति एक सामाजिक समूह है जो एक निश्चित भूभाग पर निवास करती हैं। जिसकी अपनी भाषा, सभ्यता एवं सामाजिक संगठन होता है। मध्यप्रदेश में मुख्यता गोंड, भील, बैगा,कोरकू,कोल, सहरिया, भारिया आदि जनजातियां निवास करती हैं। मध्यप्रदेश में निवासरत जनजातियों में विवाह की अनेक विधियां प्रचलित है। जिनमें प्रमुख है:-हरण विवाह, दूध लौटाओ परंपरा, राजीवाजी विवाह, क्रय विवाह, परीक्षा विवाह, परिवीक्षा विवाह, हठ विनिमय विवाह आदि।

उद्देश्य:-

1. जनजाति समाज की सामाजिक एवं विवाह परंपरा का अध्ययन
2. गोंड जनजाति की विवाह परंपरा का अध्ययन
3. भील जनजाति की विवाह परंपरा का अध्ययन
4. बैगाजनजाति की विवाह परंपरा का अध्ययन
5. कोरकू जनजाति की विवाह परंपरा का अध्ययन

मध्य प्रदेश की जनजातियों का क्षेत्रीय वितरण:-

मध्य प्रदेश के मध्य क्षेत्र में निवासरत जनजातियां:- गोंड,कोरकू, बैगा आदि जनजातियां निवास करती है इसमें मुख्यता बैतूल, छिंदवाड़ा, शिवनी, बालाघाट,मंडला, डिंडोरी हरदा आदि जिले आते हैं।

मध्य प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में निवासरत जनजातियां:- भील, भिलाला, बारेला, पटलिया आदि जनजातियां निवास करती है। इसके अंतर्गत मुख्यता धार, झाबुआ,रतलाम, खरगोन, बड़वानी, अलीराजपुर जिले आते हैं।

पूर्वी क्षेत्र में निवासरत जनजातियां:-कोल,संथाल, पनिका आदि जनजाति निवास करती हैं। सीधी, सिंगरौली, शहडोल आदि जिले इसके अंतर्गत आते हैं।

जनजातियों में विवाह परंपरा

गोंड जनजाति में विवाह परंपरा:- गोंड मध्य प्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति हैं। गोंड जनजाति की उत्पति द्रविड़ मूल से हुई है। गोंड समाज का अस्तित्व आर्य युग से भी पहले का माना जाता है।गोंड स्वयं को कोई अथवा कोईतुरे कहते है गोंड शब्द की उत्पति तेलुगु भाषा के कोंड शब्द से हुई है जिसका आशय पर्वत होता है। अतः पर्वतों पर निवास करने वाली जनजाति गोंड जनजाति है। इनकी मुख्य भाषा गोंडी होती है। गोंड जनजाति दो वर्गों में विभाजित है राजगोंड और घूर गोंड। राजगोंड शासक वर्ग होता है एवं घूर गोंड सामान्य वर्ग होता है। यह जनजाति अपने रीति रिवाज और परंपराओं का दृढ़ता से पालन करती हैं। यह पितृसत्तात्मक प्रधान जनजाति हैं।गोंड जनजाति का मुख्य व्यवसाय कृषि है। गोंड जनजाति का मुख्य भोजन बाजरा ,कोदो, कुटकी है । यह कला एवं संस्कृति से संपन्न जनजाति हैं।

गोंड जाति की कई उपजातियां हैं:-अगरिया, प्रधान, सोलहास, ओझा,नगारची, माडिया,मुड़िया,गोड जाति की उपजातियां हैं।

गोंड जाति की उपजातियां एवं उनकी विशेषता हैं

प्रधान - पूजा पाठ करने वाले
अगरिया - लोहे का काम करने वाले
सोलहास- बढ़ई का काम करने वाले
ओझा - तांत्रिक कार्य करने वाले

विवाह परंपरा

1. दूध लौटाव विवाह परंपरा
2. पठौनी विवाह विवाह परंपरा
3. अपहरण विवाह परंपरा
4. सेवा विवाह परंपरा
5. विनिमय विवाह परंपरा

दूध लौटव विवाह परंपरा:- गोंड जनजाति में भाई के लड़के का विवाह बहन की लड़की के साथ या भाई की लड़की का विवाह बहन के लड़के साथ किया जाता है यह परंपरा दूध लौटव परंपरा कहलाती है।

प्राचार्य
स्वामी विवेकानंद शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जिला-हरदा (म.प्र.)

मध्यप्रदेश में सहरिया जनजाति : एक विस्तृत अध्ययन

डॉ दीप्ति अग्रवाल सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा
मोबाइल – 9826870607, मेल आईडी – dipti2012-agrawal@gmail-com
श्रीमती शर्मिला मीणा सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा. मेल आईडी –meenasharmila87@gmail-com मोबाइल –8962560052

सारांश

भारत देश में आदिवासी जनजाति समूह एक ऐसा समूह है जो एक निश्चित क्षेत्र में स्वयं की सभ्यता, संस्कृति रहन–सहन और भाषा की परिधि में निवास रखते हैं तथा विकास की दृष्टि से सबसे पिछड़े हुए होते हैं ।सहरिया जनजाति अत्यंत प्राचीन है इसका उल्लेख वैदिक ग्रंथों, बौद्ध ग्रंथों में मिलता है। ऐतिहासिक होने के बावजूद वर्तमान समय में भी जंगलों आसपास के गांवों में इनका अस्तित्व आज भी कायम है। अशिक्षित ,आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण यह जनजाति अत्यंत पिछड़ी हुई है। पारंपरिक रहन–सहन ,धार्मिक मान्यताएं,जादू टोना आदि पर आज भी इनका विश्वास है। वनोपज जीवन का मूल आधार है पर वह भी दलाल के माध्यम से विक्रय होने के कारण केवल मजदूर बनकर रह गए हैं। पूरे विश्व में परिवर्तन की लहर में सहरिया जनजाति अपनी संस्कृति को भूलती जा रही है जिसे सहेजने की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में सहरिया जनजाति के आर्थिक धार्मिक सामाजिक जीवन शैली को जानने की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये शोध का विषय चुना गया है।

मुख्य शब्द-सहरिया जनजाति, ऐतिहासिक, सामाजिक योजनाये

प्रस्तावना

भारत विविधताओं का देश है जहाँ हर जगह विभिन्न संस्कृतियों के रंग बिखरे हुए है। इसी विविधता का लगभग 21.09 प्रतिशत भाग आदिवासी जनजातियों की संस्कृति से सरोबार है। मध्य प्रदेश भौगोलिक दृष्टि से देश के मध्य में स्थित होने के कारण विभिन्न जनजातियों की जीवन शैली और संस्कृतियों को अपने अंदर समेटे हुए हैं। भारत सरकार द्वारा निर्धारित सूची के अनुसार यहां 43 अनुसूचित जनजातियां अपने समूह के साथ निवास करती है जिनकी संख्या लगभग 1 करोड़ 53 लाख 16 हजार 784 है ।यह आबादी देश की जनजातीय आबादी का 14.64 प्रतिशत है मध्यप्रदेश में भील, मिलाला ,बारेला,पटेलिया, बैगा कोरकु गोंड बहुत सी जनजाति है जिसमें बैगा ,भारिया(पातालकोट क्षेत्र)और सहरिया भारत सरकार द्वारा घोषित विशेष पिछड़ी जनजातियां हैं। सहरिया मध्य प्रदेश की उन जनजातियों में से एक है जो विकास की दृष्टि से अत्यंत पिछड़ी हुई और शहरीकरण, तकनीकी बदलाव के कारण अपनी पहचान खोती जा रही है। इन्ही जनजातियों में से सहरिया जनजाति का अध्ययन कर इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को उजागर करने का पूरा प्रयत्न किया है ।

उद्देश्य

1 सहरिया जनजाति का ऐतिहासिक, भौगोलिक अध्ययन।
2 सहरिया जनजाति का सामाजिक व शैक्षणिक अध्ययन।
3 मध्यप्रदेश सरकार द्वारा सहरिया जनजाति के लिए संचालित योजनाओं का अवलोकन।

सहरिया जनजाति का ऐतिहासिक परिदृश्य

सहरिया जनजाति के सहरिया शब्द की उत्पत्ति 'सहर' से हुई है जिसका अर्थ जंगल होता है।

क्रमांक	प्रचलित अवधारणा	आशय
1	सहरिया	'स' का अर्थ साथी तथा ' हरिया' अर्थ शेर इस प्रकार शेर का साथी
2	सकहर	जंगल
3	सौर या सबर	कुल्हाड़ी
4	ब्रह्मा का श्राप	मनुष्य की भीड़ भाड़ से अलग रहकर एकांत व जंगल में निवास
5	सहरिया	भगवान द्वारा उनके शरीर के मेल से उत्पन्न
6	सौरी, शबरी	रामायण समकालीन, शबरी वंशज

Dipti Agrawal

CamScanner

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318
Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal
Oct. To Dec. 2022
Special Issue
0187

49

२१ वीं सदी में राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० की प्रासंगिकता

डॉ. दीपिका सेठे
सहायक प्राध्यापक,
विभागाध्यक्ष गृहविज्ञान
स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय हरदा (म.प्र.)

****

नई शिक्षा नीति २०२० भारत की शिक्षा नीति है जिसे भारत सरकार द्वारा २९ जुलाई २०२० को घोषित किया गया। सन १९८६ में जारी हुई नई शिक्षा नीति के बाद भारत की शिक्षा नीति में यह पहला नया परिवर्तन है। हाल ही में देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र मोदी जी द्वारा नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लाई गई जिसे सभी के परामर्श से तैयार किया गया है। इसे लाने के साथ ही देश में शिक्षा पर व्यापक चर्चा आरंभ हो गई है। शिक्षा के संबंध में गांधी जी का तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है। इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद का कहना था कि मनुष्य की अंर्तनिहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। इन्हीं सब चर्चाओं के मध्य हम देखेंगे कि १९८६ की शिक्षा नीति में ऐसी क्या कमियाँ रह गई थीं जिन्हें दूर करने के लिये नई राष्ट्रीय शिक्षा नति को लाने की आवश्यकता पड़ी। साथ ही क्या यह नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति उन उद्देश्यों को पूरा करने में सक्षम होगी जिसका स्वप्न महात्मा गांधी और स्वामी विवेकानंद ने देखा था।

सबसे पहले 'शिक्षा' क्या है इस पर गौर करना आवश्यक है। शिक्षा का शाब्दिक अर्थ होता है सीखने एवं सिखाने की क्रिया परंतु अगर इसके व्यापक अर्थ को देखें तो शिक्षा किसी भी समाज में निरंतर चलने वाली सामाजिक प्रक्रिया है जिसका कोई उद्देश्य होता है और जिससे मनुष्य की आंतरिक शक्तियों का विकास तथा व्यवहार को परिष्कृत किया जाता है। शिक्षा द्वारा ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि कर मनुष्य को योग्य नागरिक बनाया जाता है। गौरतलब है कि नई शिक्षा नीति २०२० की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन मंत्रालय का नाम बदलकर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है। इस नीति द्वारा देश में स्कूल एवं उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधारों की अपेक्षा की गई है। इसके उद्देश्यों के तहत वर्ष २०३० तक स्कूली शिक्षा में १००% GER के साथ–साथ पूर्व–विद्यालय से माध्यमिक स्तर तक शिक्षा के सार्वभौमिकरण का लक्ष्य रखा गया है।

प्रमुख बातें

(१) नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, २०२० के तहत वर्ष २०३० तक सकल नामांकन अनुपात (Gross Enrolment Ratio & GER) को १००: लाने का लक्ष्य रखा गया है।

(२) नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत शिक्षा क्षेत्र पर सकल घरेलू उत्पाद के ६: हिस्से के सार्वजनिक व्यय का लक्ष्य रखा गया है।

(३) मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय का नाम परिवर्तित कर शिक्षा मंत्रालय कर दिया गया है।

(४) पाँचवीं कक्षा तक की शिक्षा में मातृभाषा/स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने पर बल दिया गया है। साथ ही मातृभाषा को कक्षा–८ और आगे की शिक्षा के लिये प्राथमिकता देने का सुझाव दिया गया है।

(५) देश भर के उच्च शिक्षा संस्थानों के लिये भारतीय उच्च शिक्षा परिषद नामक एक एकल नियामक की परिकल्पना की गई है।

(६) शिक्षा नीति में यह पहला परिवर्तन बहुत पहले लिया गया था लेकिन अबकी बार २०२० में जारी किया गया।

(७) शिक्षा नीति में पांच बातो पर बल दिया गया है – शिक्षा की पहुंच,गुणवता, समानता, जवाबदेही एवं किफायती।

पृष्ठभूमि

भारतीय संविधान के नीति निदेशक तत्वों में कहा गया है कि ६ से १४ वर्ष तक के बच्चों के लिये

प्राचार्य
स्वामी विवेकानंद शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जिला–हरदा (म.प्र.)

(A High Impact Factor, Quarterly, Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal)

NAVJYOT / Vol. XI / Issue - III ISSN 2277-8063

आजादी की लड़ाई में संथालों की भूमिका

डॉ. सी. पी. गुप्ता, सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा–461331, मध्यप्रदेश
मोबाइल न. 7974824118 Email-chandrapal.gupta@yahoo.com
डॉ.धर्मेंद्र कोरी, प्राध्यापक (हिंदी) स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हरदा–461331, मध्यप्रदेश मोबाइल न. 9340402100

वास्तव में ना केवल मनुष्य बल्कि संसार के सभी जीव–जगत और वनस्पतियों को भी आजादी पसंद होती है। आजादी के बिना कोई भी मनुष्य या जीव–जगत अपने जीवन का सर्वांगीण और सतत विकास नहीं कर सकता। इसके साथ ही दूसरा सच यह भी है कि मनुष्य स्वभाव से ही वर्चस्ववादी और शोषणकारी होता है, जिसके लिए वह सतत नीतियां, षड्यंत्र और रणनीतियां भी बनाता रहता है। प्लासी युद्ध के 100 वर्षो के अंदर ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्य तथा उसके द्वारा प्रयोगात्मक विधि के क्रियान्वयन से समाज के विभिन्न वर्गों, समुदायों तथा क्षेत्रों में असंतोष के स्वर आंदोलन, विद्रोह और सैनिक विप्लव के रूप में प्रस्फुटित होते रहे हैं। इन विद्रोहों के पीछे अन्य अनेक कारण भी अंतर्निहित थे जैसे कि भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था में हस्तक्षेप, नवीन प्रशासनिक नीतियां, करारोपण, स्थानीय अर्थव्यवस्था का ध्वस्त होना, भारत में औपनिवेशिक ब्रिटिश सरकार स्थाई समाज और भू–राजस्व प्राप्त करने के उद्देश्य से जंगलों को काट कर कृषि भूमि का विस्तार कर रही थी। अंग्रेजों का साथ देकर स्थानीय जमींदारों ने जंगली भूमि को कृषि भूमि में बदलकर धान की खेती करवाना प्रारंभ कर दिया था। इस नीति के पीछे अंग्रेजों का उद्देश्य था कि वे अपने देश की आवश्यकता के मुताबिक कृषि उत्पादों का अधिकाधिक उत्पादन करा के उसे भारत से ब्रिटेन निर्यात कर सके।

जंगलों में रहने वाले भारत के मूलनिवासी इसे अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप और शोषण के रूप में देख रहे थे, जबकि तथाकथित सभ्य अंग्रेज भारत के सभी वनवासियों को क्रूर, असभ्य, उग्र, बर्बर एवं असामाजिक मानते थे। जिन्हें स्थाई रूप से बसाकर उन्हें सभ्य एवं पालतू बनाया जाना प्रस्तावित था, क्योंकि असभ्यों को सभ्य बनाने का भार मानो गोरी चमड़ी को उनके ईश्वर ने ठेके पर उपलब्ध कराया था।

1757 ई. की प्लासी की लड़ाई में औपनिवेशिक फिरंगी सत्ता की स्थापना की नींव पड़ने से लेकर 15 अगस्त 1947 ई. तक के काल का अवलोकन करने से यह स्पष्ट हो जाता है, कि इस पूरे कालखंड के दौरान भारतीय किसी न किसी कारण से अंग्रेजों की सत्ता को सदैव चुनौती प्रस्तुत करते रहे हैं। चाहे वह 1770 के दशक का सन्यासी विद्रोह हो या फिर 18 फरवरी, 1946 का शाही नौसेना का विद्रोह अर्थात 190 वर्षो की गुलामी के दौर में भारतीय आजादी की लड़ाई में अपने–अपने क्षेत्रों एवं समुदायों के हितों की रक्षा हेतु लड़े और हारे भी किंतु उन्होंने अपना कभी हौसला नहीं खोया और ना ही वे लड़ने से कभी पीछे हटे।

यहां एक और तथ्य पर विहंगम दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि अंग्रेजों से भारत का कोई ना कोई वर्ग सदैव लड़ा और हारा किंतु उसने पीछे मुड़कर यह देखने की कोशिश नहीं की, कि आखिर चंद अंग्रेज इतने विशाल देश को गुलाम कैसे बनाए हुए हैं? यह एक यक्ष प्रश्न है! किंतु इसका सामान्य उत्तर है कि हमने अंग्रेजों का प्रतिरोध एक देश के रूप में नहीं, बल्कि एक धर्म, जाति, वर्ग या क्षेत्र के रूप में सदैव किया है, तभी तो जब मराठे लड़ रहे थे तो सिख शांत थे, जब बुंदेला लड़ रहे थे तो गोंड उदासीन थे। हमारे देश का किसान, मजदूर, राजा, प्रजा, शिल्पी, व्यापारी, जागीरदार, संन्यासी, मुंडा, संथाल, भील, हो, अहोम, कोल और भी अनेक आदिवासी समुदाय अकेले लड़ते रहे और दूसरा केवल तमाशबीन बनकर अपने शोषण की इंतहा होने का इंतजार करता रहा और जब उसके शोषण की इंतहा हो गई तो वह लड़ा और फिर दूसरा तमाशबीन की भूमिका में आ गया। आखिरकार जब गांधी जी ने संपूर्ण देश को एकता के सूत्र में पिरोया तो फिर अंग्रेजों को देश से बाहर जाने के अलावा अन्य कोई विकल्प नजर नहीं आया।

स्वामी विवेकानंद शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय जिला–हरदा (म.प्र.)

भारत में अंग्रेजों ने अपनी राजनीतिक सत्ता की स्थापना हेतु विजयी यात्रा, 1757 ई. में प्लासी के युद्ध के साथ ही प्रारंभ कर दी थी, और उपनिवेशवादी व साम्राज्यवादी अश्वमेधी यज्ञ के अश्व को रोकने का जन जागरण तथा आक्रोश 1857 ई. की क्रांति के रूप में उभर कर सामने आया था, इसकी प्रकृति को लेकर इतिहासकारों में हमेशा ही मतभेद रहे हैं, और कुछ इतिहासकारों

Impact Factor
5.307 (SJIF)

RESEARCH HUB
International Peer-Reviewed Multidisciplinary E-Journal

ISSN
2582-9173

76

आदिवासी ही नहीं, आदि स्वतंत्रता सेनानी थे तिलका मांझी

डॉ सी.पी. गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
स्वामी विवेकानंद शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हरदा मध्यप्रदेश
मो.नं.- 7974824118
Email-chandrapal.gupta@yahoo.com

सारांश :- *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास यद्यपि कुछ गिने-चुने नेताओं के इर्द-गिर्द केन्द्रित रहा है, किंतु वास्तविकता यह है कि भारत की आजादी में अनगिनत ऐसे लोगों का योगदान रहा है, जिन्हें इतिहास में नेपथ्य में ढकेल दिया गया है। आदिवासियों का स्वतंत्रता संघर्ष, भारत के अन्य लोगों की तुलना में अलग था, इन्हें केवल अंग्रेजों से ही नहीं अपितु इस देश के जमीदारों और साहूकारों से भी संघर्ष करके आजादी प्राप्त करनी थी। एक बात यहां और महत्वपूर्ण हो जाती है कि आदिवासियों ने बहुत जल्दी अंग्रेजों की नीति और नीयत को समझ लिया था और उन्होंने अंग्रेजों का विरोध करना प्रारंभ कर दिया था। आदिवासी जंगल, जल, जमीन और अस्मिता, अस्तित्व तथा आजादी के लिए सतत संघर्ष करते रहे। इन लोगों से भारत के अन्य लोगों ने सबक नहीं लिया अन्यथा अंग्रेजों को 1947 से पूर्व ही खदेड़ा जा सकता था।*

मुख्य कुंजी शब्द :- उ वादी, उत्पीड़न, जमीदार, साहूकार, पहाड़िया, झूम खेती, जंगल, जल, जमीन मुखिआ आदि।

भूमिका :-

उपनिवेशवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों के विरुद्ध भारतवासियों का संघर्ष अपनी अस्मिता, अधिकार और अस्तित्व के साथ-साथ अपने अतीत के गौरव, व्यवस्थाओं, संस्कृति एवं परंपराओं को सुरक्षित और संरक्षित रखने के लिए आक्रमणकारियों के विरुद्ध संघर्ष था। भारत अनादि काल से ही शांति प्रिय देश रहा है। ना तो हमने कभी किसी दूसरे देश पर बेवजह आक्रमण किया और ना ही कभी किसी के आक्रमण को बर्दाश्त किया। यहां यह उल्लेखनीय है कि भारत की भौगोलिक परिस्थितियां ही ऐसी रही हैं कि हमें कभी किसी अन्य राष्ट्र पर आक्रमण करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई, जबकि भारतीय भूमि की उर्वराता, उत्पादकता और संपन्नता आदिकाल से ही बाह्य आक्रांताओं के लिए आकर्षण का केंद्र रही है और इसीलिए भारत तभी से आक्रांताओं के बेवजह आक्रमणों का शिकार हुआ, किंतु वह उन आक्रमणों का सामना करते हुए डटा रहा, उसने ना तो कभी मन से हार मानी और ना ही कभी उनके सम्मुख झुका।

यद्यपि ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापार के उद्देश्य से भारत में प्रविष्ट हुई थी, किंतु उसने भारतीयों की आपसी प्रतिद्वंद्विता को देखते हुए, उसने राजनीतिक सत्ता स्थापित करने के सपने देखने प्रारंभ कर दिए। भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्यवाद का अंकुरण 1757 ई. के प्लासी युद्ध के साथ ही हो गया था और उसने सुदृढ़ता 1764 के बक्सर युद्ध से प्राप्त की। 1757 ई. से लेकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक भारत का कोई ना कोई क्षेत्र या समुदाय अंग्रेजों को उनकी शोषणकारी, दमनकारी और लालची प्रवृत्ति को चुनौती प्रस्तुत करता रहा है।

प्राचार्य
स्वामी विवेकानंद शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जिला-हरदा (म.प्र.)

Impact Factor 5.307 (SJIF) | **RESEARCH HUB** International Peer-Reviewed Multidisciplinary E-Journal | ISSN 2582-9173

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में संन्यासी-फकीर विद्रोह की भूमिका

डॉ. सी.पी. गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय हरदा मध्यप्रदेश
मो.नं.- 7974824118
Emai Id l-chandrapal.gupta@yahoo.com

सारांश:- *1857 की क्रांति एक युगांतकारी घटना के रूप में भारतीय इतिहास के पन्नों पर स्वर्ण अक्षरों में अंकित है, किंतु इस महान क्रांति के पूर्व भी भारतीय समाज, अंग्रेजों के शोषण के विरुद्ध पूरी तरह से शांत कभी नहीं रहा। जब हम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का मूल्यांकन करते हैं तो पाते हैं कि 1757 के प्लासी के युद्ध से लेकर 1857 की महान क्रांति तक 40 से भी अधिक बड़े विद्रोह और सैकड़ों की संख्या में छिटपुट क्षेत्रीय विद्रोह हुए, किंतु दुर्भाग्य है कि ये क्षेत्रीय विद्रोह सफलता प्राप्त नहीं कर सके। जिसका प्रमुख कारण इन सभी विद्रोहों में आपसी सामंजस्य, एकता और संगठन का अभाव माना जा सकता है। भारत का दुर्भाग्य रहा है कि ये विद्रोह कभी भी सर्वव्यापी और राष्ट्रीय प्रकृति वाले सिद्ध नहीं हुए, क्योंकि धर्म, भाषा, क्षेत्र, उद्यम और संस्कृति की विविधता के कारण यह विद्रोह एक सीमित दायरे में ही सक्रिय रहे। या यूं कहें कि इस विविधता ने भारतीयों को एकजुट होकर, एक साथ ब्रिटिश औपनिवेशिक साम्राज्य पर हमला नहीं करने दिया। ये विद्रोह असफल होकर भी भारतीयों की शोषण के विरुद्ध लड़ने की इच्छाशक्ति को जरूर चीख-चीख कर अभिव्यक्त करते रहे हैं। ऐसे ही क्षेत्रीय विद्रोहों में* ***सन्यासी-फ़कीर*** *विद्रोह का उल्लेख किया जा सकता है, किंतु भारत का यह दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि संन्यासी विद्रोह इतना सशक्त और विस्तृत क्षेत्र में फैलाव के बाद भी संपूर्ण राष्ट्र को एकजुट नहीं कर सका, अन्यथा अंग्रेजों का भारत में साम्राज्य स्थापित करने का सपना कभी भी पूरा नहीं हो पाता।*

मुख्य कुंजी शब्द:- औपनिवेशिक, रणनीतिक स्ट्रैटिजी, गुरिल्ला युद्ध,निर्धनता, अकाल, उत्पीड़न, साहूकार, आदि।

भूमिका:-

इंग्लैंड के कुछ व्यापारियों ने मिलकर एक कंपनी बनाई, जिसका नाम ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी रखा गया और उसे शाही फरमान द्वारा 31दिसंबर 1600 ई. को विधिवत मान्यता भी प्रदान कर दी गई। यद्यपि प्रारंभ में यह केवल धनाढ्य व्यापारियों और शेयर धारकों की कंपनी थी, जिसका प्रमुख उद्देश्य पूर्व के साथ व्यापार करते हुए ब्रिटिश आर्थिक नीतियों को संरक्षित और सुरक्षित करना था, किंतु धीरे-धीरे इसने भारत में अपनी जड़ें मजबूत कीं और तत्कालीन बेसुध भारतीय शासकों से अनेक ऐसे सुविधायुक्त और विशेषाधिकार युक्त फरमान प्राप्त कर लिए, जिससे उन्हें व्यापार में अतिरिक्त लाभ मिलना प्रारंभ हो गया और यही अतिरिक्त लाभ उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षा का कारण बना। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी, व्यापार से उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद में कब बदल गई, भारतीय राजे-रजवाड़ों और जमीदारों को इसका अहसास ही नहीं हुआ। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था अधिशेष और आत्मनिर्भरता की अर्थव्यवस्था से औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था में जकड़ गई।

दक्षिण भारत में राजनीतिक रूप से स्थापित होने के उपरान्त ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्लासी के युद्ध में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को षड्यंत्र पूर्वक और इसके उपरांत 1764 ई. के बक्सर के युद्ध में सूझबूझ और कुशल रणनीतिक स्ट्रैटिजी द्वारा भारत की तीन बड़ी शक्तियों- मुगल बादशाह शाहआलम द्वीतीय, बंगाल के पदच्युत नवाब

Impact Factor 5.307 (SJIF)

RESEARCH HUB
International Peer-Reviewed Multidisciplinary E-Journal

ISSN 2582-9173

स्वस्थ्य समाज के निर्माण में योगाभ्यास की भूमिका

डॉ सी.पी. गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय हरदा मध्यप्रदेश
मो.नं.- 7974824118
Email ID -chandrapal.gupta@yahoo.com

सारांश:- *आज पूरी तरह से अस्त-व्यस्त जीवन शैली का वर्तमान समाज और विशेषकर युवाओं में घातक प्रभाव पड़ रहा है, इसका सुधार योग द्वारा ही किया जा सकता है। योग ही मनुष्य के सर्वांगीण विकास में उल्लेखनीय भूमिका निभाता हैं। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास में योग एक सार्थक भूमिका के रूप में पिछले कुछ समय से दिखाई दे रहा है। योग आत्म-साक्षात्कार का भी मार्ग प्रशस्त करता है, साथ ही लंबा और स्वस्थ जीवन जीने की कला भी सिखाता है। अतः योग ही है जो वर्तमान की अनेक सामाजिक बुराइयों का अंत कर सकता है। समत्वं योग उच्यते को हमें स्वीकार करना होगा। जिसका एक अभिप्राय यह भी है कि जैसी आत्मा और जीवन हमारा है, वैसा ही दूसरे का भी है। यदि गीता के इस विचार को हम अपना लेते हैं, तो विश्व में होने वाली अशांति और अराजकता स्वमेव ही समाप्त हो जाएगी। विश्व के बड़े-बड़े बुद्धिजीवी सयुक्त राष्ट्र संघ में बैठकर विचार, मंथन करते हैं कि विश्व को सुखी व समृद्धशाली कैसे बनाया जाए? तथा ऐसा क्या उपाय किया जाए? जिससे विभिन्न राष्ट्रों के बीच शांति, सहअस्तित्व, सहयोग, सद्भावना, समभाव और कमजोर के प्रति उत्तर दायित्व स्थापित हो।*

मुख्य कुंजी शब्द:- प्राणायाम, ध्यान परिसंचरण तंत्र, पाचन तंत्र, श्वसन तंत्र, स्फूर्तिवान, आत्मा, परमात्मा, संवेदनशीलता, सहअस्तित्व, सहयोग, सद्भावना, समभाव आदि

भूमिका:-

योग क्या है? सामान्य भाषा में जुड़ना या जोड़ना अर्थात आत्मा का परमात्मा के साथ जुड़ जाना। गीता में योग की परिभाषा समत्वं योग उच्यते के रूप में की गई है, जिसका आशय है सभी फल-प्रतिफल में समभाव रखना। ऐसी अवस्था में कभी भी मनुष्य के अंदर दुख या तनाव उत्पन्न नहीं होता उसके लिए सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय कोई महत्त्व नहीं रखते। इसी प्रकार समाज शब्द का सामान्य भाषा में अर्थ है व्यक्तियों का समूह। यह समूहन व्यक्तियों के आपसी सद्भाव, जुड़ाव, सहिष्णुता, संवेदनशीलता और दायित्व बोध पर आधारित होता है। अर्थात समाज को एक सूत्र में पिरोने के लिए प्रत्येक प्राणी में सामंजस्य एवं सद्भावना की दृढ़ इच्छाशक्ति का होना अनिवार्य है। स्पष्ट है कि चूंकि समाज व्यक्तियों का समूह है और योग द्वारा व्यक्तियों के सच्चरित्र का निर्माण होता है, जो एक आदर्श समाज का गठन करता है अर्थात योग और समाज एक सिक्के के दो पहलू हैं। समाज जहां योग को पृष्ठभूमि देता है, वहीं योग समाज को उसका वास्तविक लक्ष्य प्राप्त करने में अहम भूमिका निभाता है। इस प्रकार योग का मनुष्य के जीवन, समाज, राष्ट्र और विश्व सभी पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

समाज एक वृहद शब्द और संस्था है, विश्व के सभी विषयों की सामग्री का स्रोत भी समाज ही है, इसलिए समाज का स्वास्थ्य जैसा होगा उसके अनुरूप ही अन्य विषयों और व्यवस्थाओं का विकास होगा। आज की सभी समस्याओं का केंद्र भी समाज ही है, ऐसी स्थिति में हमें स्वस्थ समाज के निर्माण का कार्य प्राथमिकता से करना होगा। स्वस्थ समाज ही स्वस्थ राष्ट्र की आधारशिला हो सकता है, ऐसे में प्रश्न उठता है कि स्वस्थ समाज का निर्माण कैसे संभव है? स्वाभाविक है, जब समाज की सबसे छोटी इकाई व्यक्ति होता है, तो फिर सुधार की शुरुआत भी व्यक्ति से ही होनी चाहिए। एक स्वस्थ समाज का आधार उसके व्यक्तियों की जीवन शैली होती है, और संयमित जीवन शैली स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मस्तिष्क वाले नागरिकों को तैयार करती है और ऐसे नागरिक ऊर्जावान चरित्रवान और समाज हितेषी सिद्ध हो सकते हैं।

स्वाभाविक प्रश्न है कि जीवन शैली का निर्माण इलेक्ट्रिक बटन की तरह नहीं होता की एक झटके में बटन बंद और चालू हो जाये, हमारी बचपन से लेकर किशोरावस्था तक की आदतें ही जीवन शैली हैं, जिसकी शुरुआत बचपन से ही होती है। जीवन

IMPACT FACTOR 5.473(SJIF)

UPA NATIONAL E-JOURNAL

Interdisciplinary Peer-Reviewed Indexed Journal

Special Issue : Volume -9 : Issue-1 (March-2023)

ISSN 2455-4375

120

नारी सम्मान और श्रीरामचरितमानस

डॉ सी.पी. गुप्ता

सहायक प्राध्यापक (इतिहास)

स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर

महाविद्यालय हरदा मध्यप्रदेश

मो.नं.- 7974824118

Email Id - chandrapal.gupta@yahoo.com

सारांश:-

श्रीरामचरितमानस विश्व का सबसे महानतम भक्ति महाकाव्य के रूप में जाना जाता है और इसकी महत्ता इससे सुनिश्चित होती है कि इसे भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में निवासरत् हिंदुओं के घरों में देखा और सुना जा सकता है। श्रीरामचरितमानस जहां एक ओर विश्व का अद्वितीय साहित्यक एवं भक्ति ग्रंथ है तो वहीं, यह अद्भुत प्रबंध महाकाव्य भी है और इसीलिए इसके कथोपकथन पात्र की परंपरागत छवि, नियत और स्वभाव के सर्वथा अनुकूल रखने की कोशिश की गई है। चूंकि यह ग्रंथ मूलतः अवधी भाषा में लिखा गया है और यह दोहा, चौपाई, छंद और सोरठा की मात्राओं पर पूर्णतः अनुशासित और आबद्ध है, इसी कारण कई स्थानों पर शब्दों का चयन मात्रा एवं भाषा की सुगमता के लिए किया गया है। अतः ऐसे शब्दों का अर्थ शब्दार्थ के साथ-साथ भावार्थ और उसके प्रसंगार्थ समझना ही स्वयं की समझदारी होगी। श्रीरामचरितमानस एक विशाल महाकाव्य है यह सात कांडों में विभाजित हैं और इसमें 12800 पंक्तियां हैं इसमें से कुल 1073 दोहे हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इसमें लगभग 22000 शब्दों का प्रयोग किया है। जिस समय इसकी रचना की गयी उस समय भारत में मुगलों की एकछत्र राजनीतिक सत्ता स्थापित हो चुकी थी और हिंदू समाज पूरी तरह से निराशा के गर्त में पड़ा कराह रहा था। तभी सूरदास ने जहां एक ओर हंसते-खेलते श्रीकृष्ण का वर्णन करके तत्कालीन समाज में निराशा को नव चेतना और उल्लास में परिवर्तित किया, वहीं दूसरी ओर तुलसीदास ने अपने श्रीरामचरितमानस के द्वारा मानव को आशावादी और कर्मशील बनने की प्रेरणा दी।

तुलसीदास जी ने राजसत्ता को आईना दिखाने के लिए भी इस ग्रंथ की रचना की थी। इसीलिए उन्होंने आदर्श रामराज्य की कल्पना की ओर तत्कालीन राजा को अप्रत्यक्ष रूप से अपनी शासन व्यवस्था में सुधार करने हेतु प्रेरित किया। जब एक बार अकबर का सिपहसालार और दरबारी नवरत्न अब्दुर्रहीम खानखाना ने तुलसीदास जी से अकबर की प्रशासनिक व्यवस्था की तारीफ की तब तुलसीदास जी ने जवाब दिया था कि निश्चित तौर पर खानखाना साहब आपके शहंशाह अकबर ने शासन व्यवस्था का पुनर्गठन किया है और उसमें सुधार भी किया है किंतु उसमें अभी भी न्याय, मानवता और सामाजिक समानता स्थापित करने की जरूरत है।

मुख्य कुंजी शब्द:- ताड़ना, कुदृष्टि , मायाँ , अनल, नारा, धरनी, सिखावन

भूमिका :-

श्रीरामचरितमानस एक ऐसा भक्ति काव्य है, जिसमें जातीय समरसता, लैंगिक समानता, सामाजिक संगठन, आर्थिक नीतियां और करारोपण, राजनीतिक लोकतांत्रिक व्यवस्था, नैतिक नियम, मानवीय मूल्यों और दायित्वों

प्राचार्य
स्वामी विवेकानंद शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जिला-हरदा (म.प्र.)

मध्यप्रदेश में सहरिया जनजाति : एक विस्तृत अध्ययन

डॉ दीप्ति अग्रवाल सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा
मोबाइल – 9826870607, मेल आईडी – dipti2012-agrawal@gmail-com
श्रीमती शर्मिला भीणा सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा. मेल आईडी –meenasharmila87@gmail-com मोबाइल –8962560052

सारांश

भारत देश में आदिवासी जनजाति समूह एक ऐसा समूह है जो एक निश्चित क्षेत्र में स्वयं की सभ्यता, संस्कृति रहन–सहन और भाषा की परिधि में निवास रखते हैं तथा विकास की दृष्टि से सबसे पिछड़े हुए होते हैं ।सहरिया जनजाति अत्यंत प्राचीन है इसका उल्लेख वैदिक ग्रंथों, बौद्ध ग्रंथों में मिलता है। ऐतिहासिक होने के बावजूद वर्तमान समय में भी जंगलों आसपास के गांवों में इनका अस्तित्व आज भी कायम है। अशिक्षित ,आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण यह जनजाति अत्यंत पिछड़ी हुई है। पारंपरिक रहन–सहन ,धार्मिक मान्यताएं,जादू टोना आदि पर आज भी इनका विश्वास है। वनोपज जीवन का मूल आधार है पर वह भी दलाल के माध्यम से विक्रय होने के कारण केवल मजदूर बनकर रह गए हैं। पूरे विश्व में परिवर्तन की लहर में सहरिया जनजाति अपनी संस्कृति को भूलती जा रही है जिसे सहेजने की आवश्यकता है। इसी संदर्भ में सहरिया जनजाति के आर्थिक धार्मिक सामाजिक जीवन शैली को जानने की आवश्यकता है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये शोध का विषय चुना गया है।

मुख्य शब्द-सहरिया जनजाति, ऐतिहासिक, सामाजिक योजनाये

प्रस्तावना

भारत विविधताओं का देश है जहाँ हर जगह विभिन्न संस्कृतियों के रंग बिखरे हुए है। इसी विविधता का लगभग 21.09 प्रतिशत भाग आदिवासी जनजातियों की संस्कृति से सरोबार है। मध्य प्रदेश भौगोलिक दृष्टि से देश के मध्य में स्थित होने के कारण विभिन्न जनजातियों की जीवन शैली और संस्कृतियों को अपने अंदर समेटे हुए हैं। भारत सरकार द्वारा निर्धारित सूची के अनुसार यहां 43 अनुसूचित जनजातियां अपने समूह के साथ निवास करती है जिनकी संख्या लगभग 1 करोड़ 53 लाख 16 हजार 784 है ।यह आबादी देश की जनजातीय आबादी का 14.64 प्रतिशत है मध्यप्रदेश में भील, मिलाला ,बारेला,पटेलिया, बैगा कोरकु गोंड बहुत सी जनजाति है जिसमें बैगा ,भारिया(पातालकोट क्षेत्र)और सहरिया भारत सरकार द्वारा घोषित विशेष पिछड़ी जनजातियां हैं। सहरिया मध्य प्रदेश की उन जनजातियों में से एक है जो विकास की दृष्टि से अत्यंत पिछड़ी हुई और शहरीकरण, तकनीकी बदलाव के कारण अपनी पहचान खोती जा रही है। इन्ही जनजातियों में से सहरिया जनजाति का अध्ययन कर इनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को उजागर करने का पूरा प्रयत्न किया है ।

उदेश्य

1 सहरिया जनजाति का ऐतिहासिक, भौगोलिक अध्ययन।
2 सहरिया जनजाति का सामाजिक व शैक्षणिक अध्ययन।
3 मध्यप्रदेश सरकार द्वारा सहरिया जनजाति के लिए संचालित योजनाओं का अवलोकन।

सहरिया जनजाति का ऐतिहासिक परिदृश्य

सहरिया जनजाति के सहरिया शब्द की उत्पत्ति 'सहर' से हुई है जिसका अर्थ जंगल होता है।

क्रमांक	प्रचलित अवधारणा	आशय
1	सहरिया	'स' का अर्थ साथी तथा ' हरिया' अर्थ शेर इस प्रकार शेर का साथी
2	सकहर	जंगल
3	सौर या सबर	कुल्हाड़ी
4	ब्रह्मा का श्राप	मनुष्य की भीड़ भाड़ से अलग रहकर एकांत व जंगल में निवास
5	सहरिया	भगवान द्वारा उनके शरीर के मेल से उत्पन्न
6	सौरी, शबरी	रामायण समकालीन, शबरी वंशज

Dipti Agrawal

CamScanner

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 6.375
Vol - XIX, Issue - II, December - 2022

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

मध्यप्रदेश का जनजाति समाज एवं जनजातियों में विवाह परंपरा

श्रीमती शर्मिला मीणा
डॉ. दीप्ति अग्रवाल

1. सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य, स्वामी विवेकानन्द शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा
2. सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य, स्वामी विवेकानन्द शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदा

प्रस्तावना:- विवाह का शाब्दिक अर्थ है उद्वह अर्थात वधू को वर के घर ले जाना। हिंदू धर्म में विवाह को 16 संस्कारों में से एक प्रमुख संस्कार माना गया है। हिंदू संस्कृति के अनुसार यह एक सामाजिक प्रथा है जिससे गृहस्थ जीवन का प्रथम चरण माना गया है इसे पाणिग्रहण संस्कार भी कहा जाता है। विवाह का शाब्दिक अर्थ है उतरदायित्व का वहन करना भी है। अन्य धर्मों में विवाह एक करार होता है जिसे विषम परिस्थितियों में तोड़ा जा सकता है, किंतु हिंदू धर्म के अनुसार विवाह को जन्म जन्मांतर का संबंध माना गया है।

लूसी मेयर की परिभाषा के अनुसार-

''विवाह की परिभाषा यह है कि यह स्त्री-पुरूष का ऐसा योग है, जिससे स्त्री से जन्मा बच्चा माता-पिता की वैध सन्तान माना जाता है।''

बोगार्डस ने विवाह को परिभाषित करते हुए लिखा है अनुसार, ''विवाह स्त्री और पुरूष के पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने की एक संस्था है।'

भारत में अनेक जनजातियां निवास करती हैं भारत में जनसंख्या के आधार पर सबसे अधिक जनजातियां मध्यप्रदेश में पाई जाती है। 2011 की जनगणना के अनुसार मध्य प्रदेश की कुल जनसंख्या 72626809 है। मध्यप्रदेश में जनजाति की जनसंख्या 15316784 है मध्य प्रदेश की कुल जनसंख्या का 21.10 प्रतिशत जनजाति जनसंख्या है। जिसमें पुरुषों की जनसंख्या 7719404 तथा महिलाओं की जनसंख्या 7597380 है।

जनजाति एक सामाजिक समूह है जो एक निश्चित भूभाग पर निवास करती हैं। जिसकी अपनी भाषा, सभ्यता एवं सामाजिक संगठन होता है। मध्यप्रदेश में मुख्यता गोंड, भील, बेगा,कोरकू,कोल, सहरिया, भारिया आदि जनजातियां निवास करती हैं। मध्यप्रदेश में निवासरत जनजातियों में विवाह की अनेक विधियां प्रचलित है। जिनमें प्रमुख है:-हरण विवाह, दूध लौटाओ परंपरा, राजीबाजी विवाह, क्रय विवाह, परीक्षा विवाह, परिवीक्षा विवाह, हठ विनिमय विवाह आदि।

उद्देश्य:-

1. जनजाति समाज की सामाजिक एवं विवाह परंपरा का अध्ययन
2. गोंड जनजाति की विवाह परंपरा का अध्ययन
3. भील जनजाति की विवाह परंपरा का अध्ययन
4. बैगाजनजाति की विवाह परंपरा का अध्ययन
5. कोरकू जनजाति की विवाह परंपरा का अध्ययन

मध्य प्रदेश की जनजातियों का क्षेत्रीय वितरण:-

मध्य प्रदेश के मध्य क्षेत्र में निवासरत जनजातियां:- गोंड,कोरकू, बैगा आदि जनजातियां निवास करती है इसमें मुख्यता बैतूल, छिंदवाड़ा, शिवनी, बालाघाट,मंडला, डिंडोरी हरदा आदि जिले आते हैं।

मध्य प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में निवासरत जनजातियां:- भील, भिलाला, बारेला, पटलिया आदि जनजातियां निवास करती है। इसके अंतर्गत मुख्यता धार, झाबुआ,रतलाम, खरगोन, बड़वानी, अलीराजपुर जिले आते हैं।

पूर्वी क्षेत्र में निवासरत जनजातियां:-कोल,संथाल, पनिका आदि जनजाति निवास करती हैं। सीधी, सिंगरौली, शहडोल आदि जिले इसके अंतर्गत आते हैं।

जनजातियों में विवाह परंपरा

गोंड जनजाति में विवाह परंपरा:- गोंड मध्य प्रदेश की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति हैं। गोंड जनजाति की उत्पति द्रविड़ मूल से हुई है। गोंड समाज का अस्तित्व आर्य युग से भी पहले का माना जाता है गोंड स्वयं को कोई अथवा कोईतुरे कहते है गोंड शब्द की उत्पति तेलुगु भाषा के कोड शब्द से हुई है जिसका आशय पर्वत होता है। अतः पर्वतों पर निवास करने वाली जनजाति गोंड जनजाति है। इनकी मुख्य भाषा गोंडी होती है। गोंड जनजाति दो वर्गों में विभाजित है राजगोंड और धूर गोंड। राजगोंड शासक वर्ग होता है एवं धूर गोंड सामान्य वर्ग होता है। यह जनजाति अपने रीति रिवाज और परंपराओं का दृढ़ता से पालन करती हैं। यह पितृसत्तात्मक प्रधान जनजाति हैं गोंड जनजाति का मुख्य व्यवसाय कृषि है। गोंड जनजाति का मुख्य भोजन बाजरा ,कोदो, कुटकी है । यह कला एवं संस्कृति से संपन्न जनजाति हैं। गोंड जाति की कई उपजातियां हैं:-अगरिया, प्रधान, सोलहास, ओझा,नगारची, माड़िया,मुड़िया,गोंड जाति की उपजातियां हैं।

गोंड जाति की उपजातियां एवं उनकी विशेषता हैं

प्रधान - पूजा पाठ करने वाले
अगरिया - लोहे का काम करने वाले
सोलहास- बढ़ई का काम करने वाले
ओझा - तांत्रिक कार्य करने वाले

विवाह परंपरा

1. दूध लौटाव विवाह परंपरा
2. पठौनी विवाह विवाह परंपरा
3. अपहरण विवाह परंपरा
4. सेवा विवाह परंपरा
5. विनिमय विवाह परंपरा

दूध लौटव विवाह परंपरा:- गोंड जनजाति में भाई के लड़के का विवाह बहन की लड़की के साथ या भाई की लड़की का विवाह बहन के लड़के साथ किया जाता है यह परंपरा दूध लौटव परंपरा कहलाती है।

65

Dr. Dipti Agrawal